2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए

पुस्तक का नाम - निर्मला (उपन्यास)

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

शास्त्री प्रथम खण्ड, शब्दभाषा हिन्दी

अ० दि० - पत्र

डॉ० देव चरण प्रसाद
स०प्रो० हिन्दी
श्री०अ०स० महा०वि० कुसुम्ही,
प्रतिया

Date: 10/06/21

प्रश्न :- उपन्यासकार के रूप में प्रेमचन्द जी की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :- उर्दू साहित्य के उपन्यासकार नवाबराय जब हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द के नाम से अवतीर्ण हुए तो उपन्यास क्षेत्र में क्रान्ति सी आ गई। हिन्दी उपन्यास परम्परा में उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द एक ऐसे बिन्दु हैं जिनके दोनों ओर उपन्यास साहित्य की भिन्न-भिन्न रेखाएँ स्पष्ट परिलक्षित होती है। मुंशी प्रेमचन्द से पूर्व हिन्दी उपन्यास को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं ① सामाजिक उपन्यास ② ऐतिहासिक उपन्यास ③ तिलस्मी, जासूसी तथा अद्भुत घटना प्रधान उपन्यास।

इन सभी सामाजिक उपन्यासों में धर्म की जय, आदर्श आचरण का महत्व, अंधविश्वासों का त्याग, सतीत्व की महिमा, ईश्वरीय न्याय में विश्वास तथा राष्ट्रीय प्रेम आदि का चित्रण था पूर्व प्रेमचन्द युग के ऐतिहासिक उपन्यास सच्चे अर्थों में ऐतिहासिक उपन्यास नहीं थे। इन उपन्यासों के लेखक इतिहास से हटकर प्रणय कथाओं, रहस्यपूर्ण प्रसंगों और कुतूहलवर्द्धक घटनाओं को लिखने में लग गये। इन उपन्यासों का उद्देश्य पाठक का मनोरंजन मात्र था। इतिहास तो केवल दिखावा था।

घटना प्रधान उपन्यासों में तिलस्मी-ऐयारी, जासूसी और अद्भुत घटना प्रधान उपन्यास आते हैं। 'तिलस्म' शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ 'इन्द्रजाल' है। तिलस्म बाँधने में बड़े-बड़े तांत्रिकों और युक्तियों की सहायता ली जाती थी। ऐयारी तिलस्म तोड़ने में कुशल व्यक्तित्व कहा जाता है। इन तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों के प्रवर्तक श्री देवकीनन्दन खत्री थे इन्होंने 1888 ई० में चन्द्रकान्ता उपन्यास लिखा था

शेष आगे

इसके २ भाग हैं। इस उपन्यास की इतनी अधिक लोक प्रियता हुई कि सैकड़ों युवकों ने इसे पढ़ने के लिए हिन्दी ~~सिख~~ सीखी थी। आधुनिक उपन्यासकारों में गोपाल राम गहमरी का नाम अग्रगण्य है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द के पूर्व लिखे गये उपन्यास मौलिक उपन्यास नहीं थे। ऐसे उपन्यासों के पात्र केवल ~~काल्पनिक~~ काल्पनिक थे। इस काल के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता का पूर्ण अभाव था।

प्रेमचन्द युग में हिन्दी उपन्यास सामाजिक जीवन से जुड़ गया। प्रेमचन्द ने घोषणा की — मैं समाज का झण्डा लेकर चलने वाला व्यक्ति हूँ।

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने समस्त उपन्यासों में सामाजिक जीवन का यथार्थ पाठकों के समक्ष रखा। जैसे- निर्मला, उपन्यास के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज में अनमेल विवाह और दहेज प्रथा के विरुद्ध जहाँ एक ओर शंखनाद किया है तो वहीं दूसरी ओर 'गोदान' जैसे उपन्यास में भारतीय कृषक जीवन का जैसा सच्चा वर्णन किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। गबन, प्रेमाश्रम, कायाकल्प आदि उपन्यासों में उन्होंने अन्तर्मुखी यथार्थवादी दृष्टिकोण को भी आत्मसात किया है।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि०
10/06/21

प्रश्न:- 'पथिक' की हत्या के उपरांत की स्थितियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- कवि रामनरेश त्रिपाठी ने पथिक की हत्या के बादकी स्थितियों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। कवि का कहना है कि मानव जीवन नश्वर है। यहाँ अर्थात् इस संसार में कुछभी शाश्वत नहीं है। राजा, रंग, मानी, अभिमानी सबों को एक दिन मृत्यु प्राप्त करनी ही है। यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो सब दिन यहाँ रहनेके लिए आया है।

यहाँ न तो कोई अकिंचन ही बचा न अभिमानी राजा ही बचा है। बड़े-बड़े विद्वान, मूर्ख और सज्जन अन्ततः सभी विदा हो गये। इनलोगों की केवल एकही वस्तु यहाँ रह गई, वह है उनकी अच्छी-बुरी चर्चाएँ। वे कहाँ गए, किस गुफा में अदृश्य हो गये यह कोई नहीं कह सकता है। इनलोगों ने कभी कोई संदेश हमें नहीं भेजा है। मृत्यु सबसे बड़ी चीज है, क्योंकि इसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है।

'पथिक' भी अपने शरीर को त्याग कर न जाने किस अज्ञात देश का वासी हो गया, कौन कह सकता है। जिस दिन से वह गया, सम्पूर्ण देश में उदासी छाई हुई है। लोग अपनी पीड़ा समझते हैं, किन्तु व्यक्त नहीं कर सकते हैं। यह उनकी मजबूरी है। लोग ऊपरी मन से सभी काम करते थे, किन्तु कहीं भी आन्तरिक ~~प्रसन्नता~~ प्रसन्नता नहीं थी। उन्हें अन्यायी और अत्याचारी राजा का डर हमेशा बना रहता था। यही कारण है कि वे अपनी व्यथा को भीतर ही झेलते थे।